एकलव्य का प्रकाशन

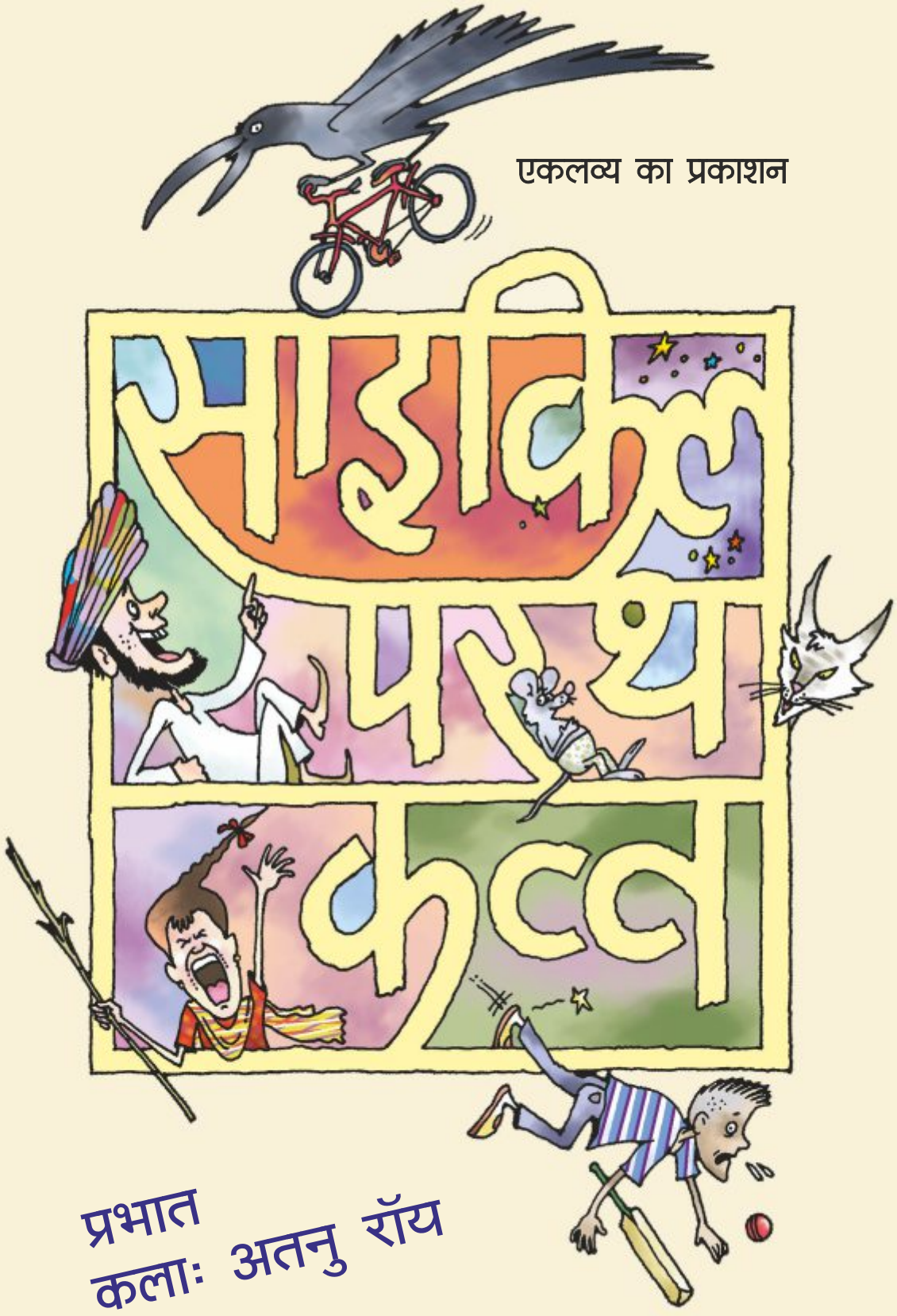

प्रभात
कला: अतनु रॉय

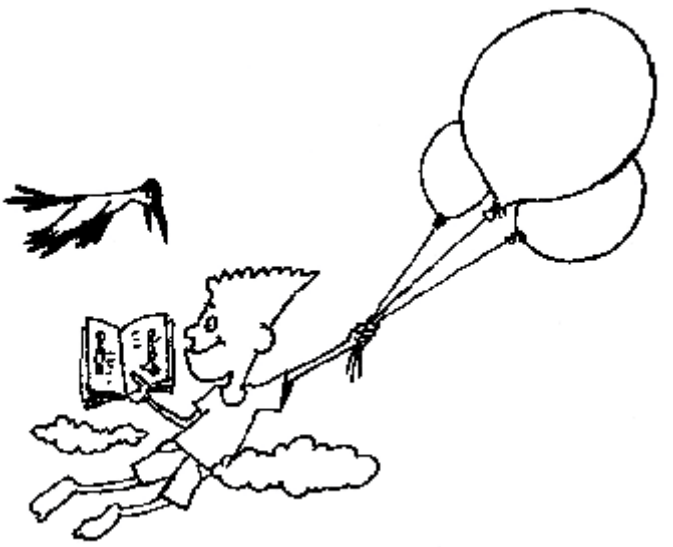

साइकिल पर था कव्वा

प्रभात
कलाः अतनु रॉय

एकलव्य का प्रकाशन

साइकिल पर था कव्वा! बच्चों की दुनिया में कविता की एक और किताब का इस्तकबाल!

कुछ चीज़ें हैं जो इस किताब को ज़रा खास बनाती हैं। इसकी कविताएँ पाँच से दस साल के बच्चों के लिए एकदम फिट बैठेंगी। इनकी भाषा आसान है। ये घुमावदार नहीं हैं। इनके अर्थ ज़्यादातर इनके तल पर ही स्थित हैं।

संग्रह की कुछ कविताएँ इतनी सरल हैं कि वे मुश्किल से कविता होने पर राज़ी होंगी। कहीं-कहीं वे एक दोस्ताई संवाद-सी लगती हुई शुरू तो होंगी पर पूरी होते-होते कविता की मिठास भी घोल जाएँगी। प्रभात की कविताओं में यह आँख-मिचौनी और धूप-छाँव का खेल बहुत है। जैसे,

आओ भाई खिल्लू
अभी तो की थी मिल्लू
भरा नहीं क्या दिल्लू

ये तुकबन्दियाँ भाषा सीख रहे बच्चों की पलक और पनप रही भाषा को हिम्मत बँधाएँगी। वे भाषा की ज़्यादा खुली छवि प्रस्तुत कर उन्हें रियाज़ के लिए उत्साहित भी करेंगी।

इन कविताओं के विषय वही हैं जो इस उमर के बच्चों द्वारा बार-बार बरते जाते हैं। इनमें चुटकियाँ हैं और भाषाई तोड़-फोड़ भी है। भाषा को कवि ने वहाँ तक लहर जाने दिया है जहाँ तक पहुँचकर उसमें लय आती है। प्रभात राजस्थान यानी ऊँटों के देश के कवि हैं। कविताओं में उन्होंने भाषा की सवारी से वैसी ही लचक पैदा की है जैसी एक ऊँट के सवार को मिल जाती है।

इस मिज़ाज की कविताएँ यह भी बताती चलती हैं कि लिखित रहकर भाषा का पूरा नहीं पड़ता। वह ध्वनियों के उतार-चढ़ाव के साथ ही अपने पूरे रंग में आती है। तो, इन कविताओं में अभिनय की तरफ जाता एक झीना-सा रास्ता भी मिलता है।

दुनिया की गुत्थी को देख-सुन-स्पर्श कर सुलझाने में मशगूल बच्चे अक्सर चीज़ों को उलट-पलटते, पटकते हैं। वे चखकर, और चीज़ों की तहें खोलकर (तोड़कर?) अनवरत उन्हें जानने में लगे होते हैं। इन कविताओं में भाषा के साथ कवि ठीक यही करता दिखाई देता है। इसीलिए शायद ये कविताएँ पूरी कविताएँ न होकर कविताओं की एक शाख जैसी हैं। कविताओं की कलम! इस मायने में कि जब ये ज़बान पर लगेंगी तो खूब फलेंगी-फूलेंगी। ये टुकड़े जितने दिखते हैं असल में वे उससे ज़्यादा फैलाव लिए हैं। इनमें सबकी ज़बान के लिए एक न एक खुलन सहेजी मिलेगी। जैसे,

चूहेएएएएएएएएएएए
किससे पूछ के खाए
तूने मेरे
पुएएएएएएएएएएएए

को पढ़ते हुए कभी अचानक आपको कोई दूसरा टुकड़ा याद आ सकता है -

ओ चीटेएएएएएएएएएए
क्या ले जा रहा है?
घसीटे-घसीटे एएएएएएएएएएएए

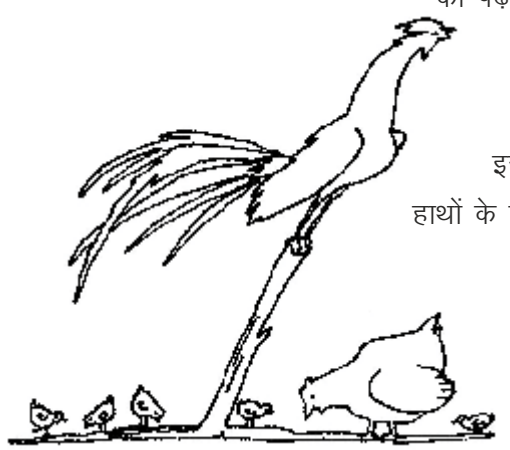

इस संग्रह की कई कविताएँ ज़बान से हाथों में उतर जाने वाली भी हैं। हाथों के छोटे-छोटे कमालों को इन कविताओं ने अपने में पिरो रक्खा है, जैसे,

ताली बजी पट
गुब्बारा फूटा फट!

उम्मीद है ये कविताएँ पढ़ने-सीखने को आनन्द से भर देंगी!

सुशील शुक्ल
एकलव्य, भोपाल

कौन-कहाँ?

खिल्लू 4

पीटेना 4

बिलैया 5

ईख चीख 5

ऐ 6

छू लूँ 6

बल्लू टल्लू पल्लू 7

छनमनिया 7

आलू खा लूँ 8

हव्वा 9

तुक्का 9

टपके 10

मुलाकात 10

पक पक 11

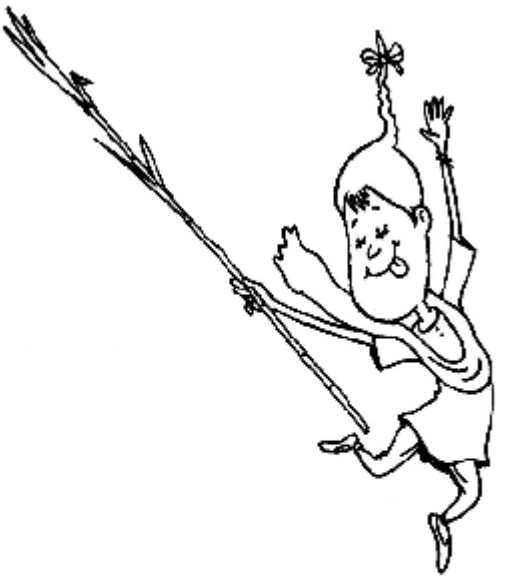

फुस फुस फुस्स 12

नौटंकी 13

हल्लू 13

गोलमटोल 14

लट्टू 14

पट पट खट खट 15

फंका 16

दो शैतान 16

चीन 17

डरो नहीं 17

चकरम 18

कुतका बुतका 19

खिल्लू

आओ भाई खिल्लू
अभी तो की थी मिल्लू
भरा नहीं क्या दिल्लू

पीटेना

बोलीं मैडम पीटेना
पिटने से कोई छूटे ना
कोई बच्चा रूठे ना

बिलैया

पी लिया दूध बिलैया ने
क्या डालें अब चैया में

ईख चीख

विमली ने जब देखी ईख
उसके मुँह से निकली चीख
मुझको अभी दिलाओ ईख

ऐ

चूहेएएएएएएएएएएएए
किससे पूछ के खाए
तूने मेरे
पुएएएएएएएएएएएएए

छू लूँ

फूल रहे थे फूलू
देख के बोला भूलू
क्या मैं तुमको छू लूँ

बल्लू टल्लू पल्लू

बल्लू गिर गया बल्ले से
टल्लू गिर गया टल्ले से
पल्लू किवाड़ के पल्ले से
बाकी गिर गए हल्ले से

छनमनिया

गरम दूध छनमनिया ने
ठण्डा किया छलनिया में
जो ना छने कटोरी में
जाए सीधा मोरी में

आलू खा लूँ

आओ भाई टालू
खाओ उबले आलू
काम खेत में तुमने
किया न होगा चालू

सुनकर बोला टालू
काम तो करता चालू
सोचा पहले आलू
उबल गए तो खा लूँ

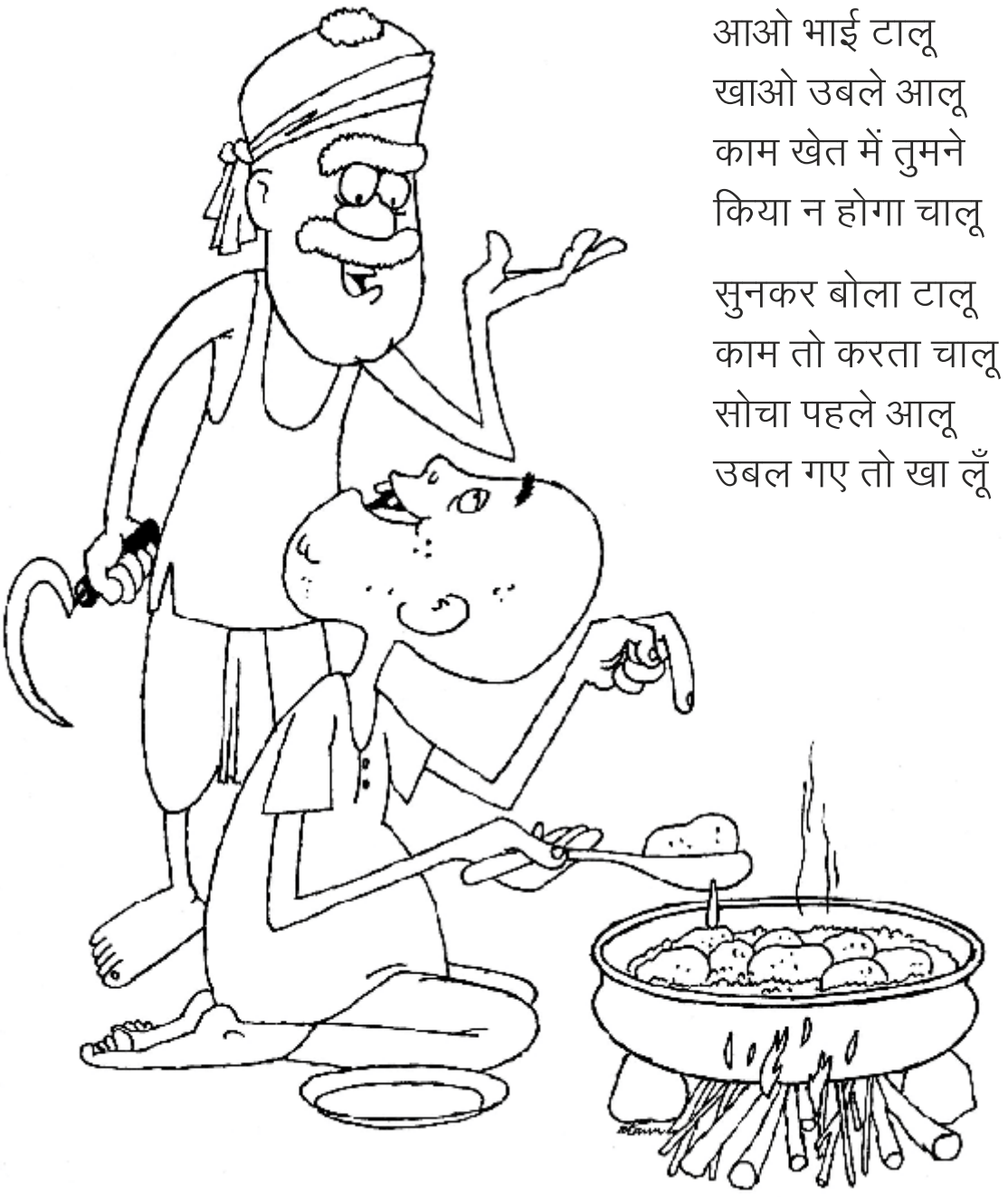

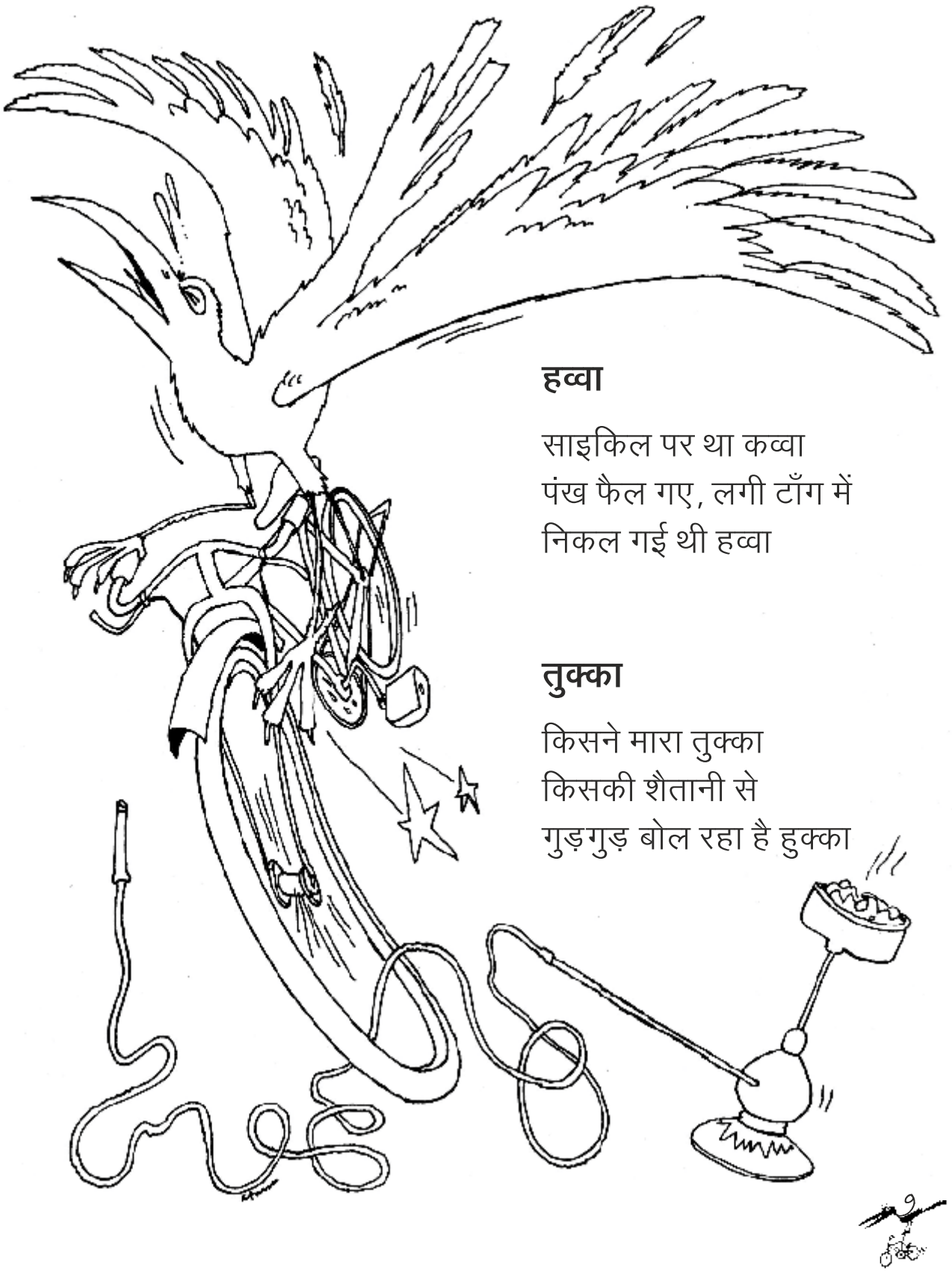

हव्वा

साइकिल पर था कव्वा
पंख फैल गए, लगी टाँग में
निकल गई थी हव्वा

तुक्का

किसने मारा तुक्का
किसकी शैतानी से
गुड़गुड़ बोल रहा है हुक्का

टपके

पौधों से टप टप
टपाटप टपके
टपक टप टम टम
टमाटर टपके

मुलाकात

मेरा नाम है हँसता सिंह

हँसना भूल जाओगे बच्चू
मेरा नाम है बस्ता सिंह

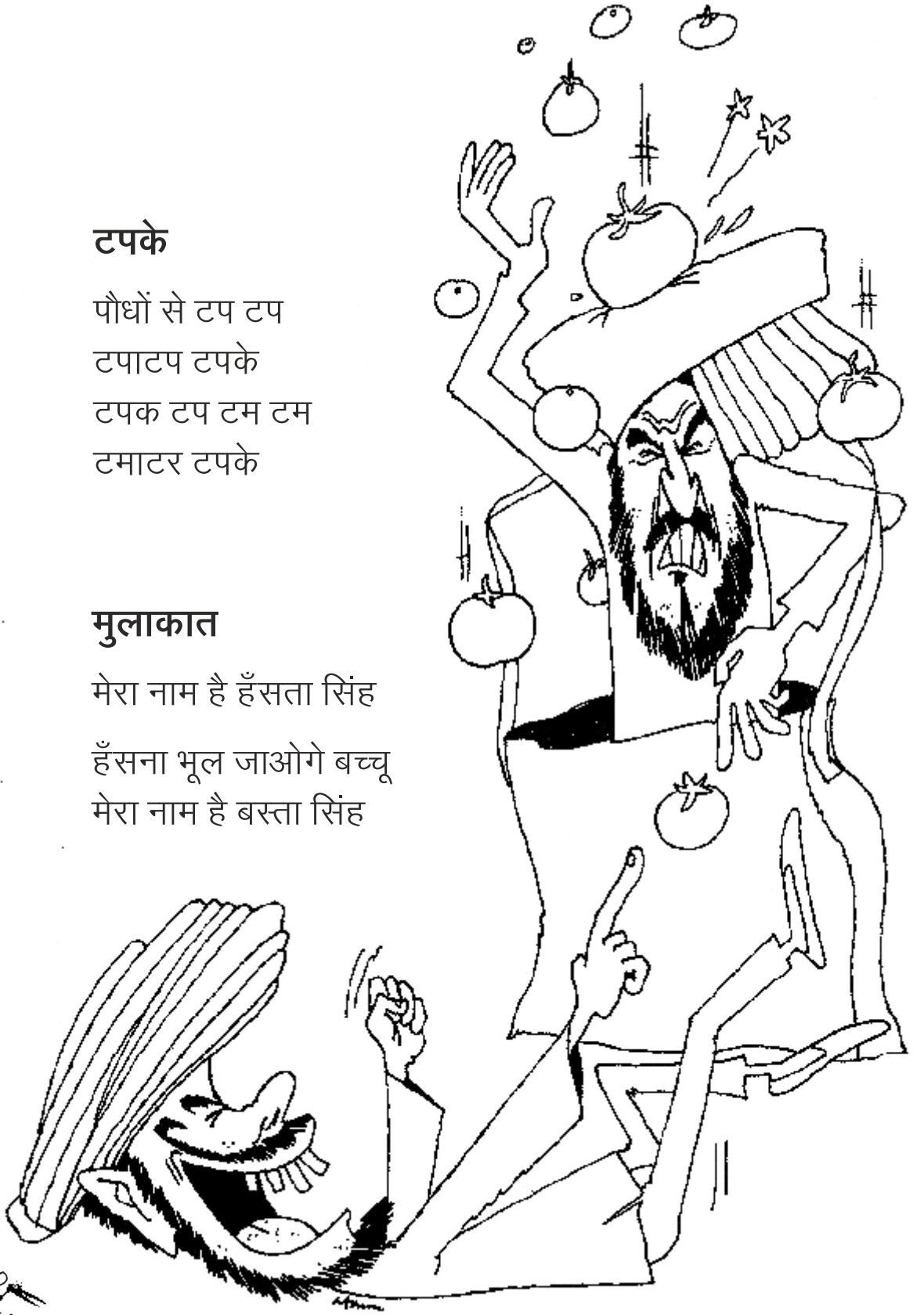

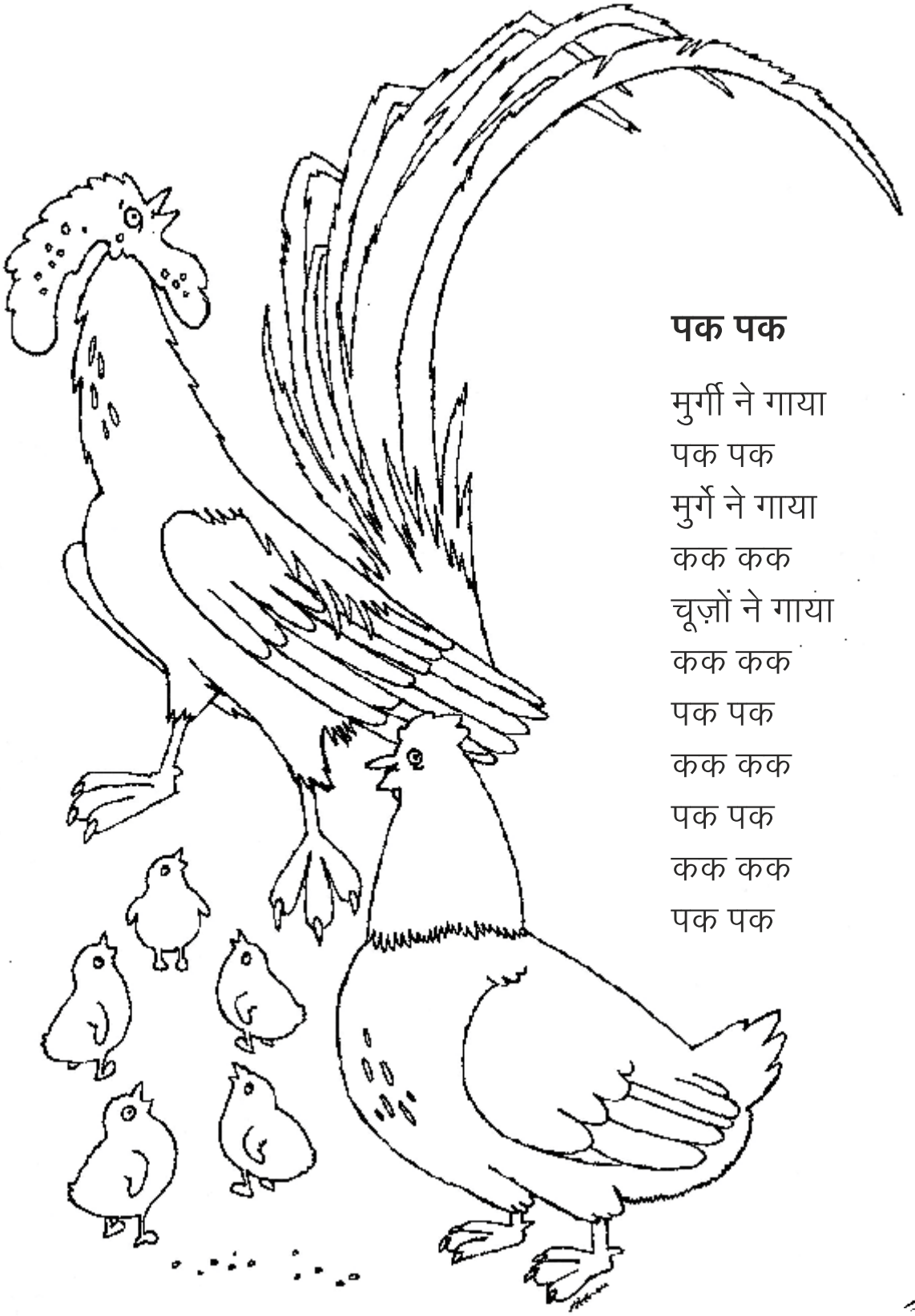

पक पक

मुर्गी ने गाया
पक पक
मुर्गे ने गाया
कक कक
चूज़ों ने गाया
कक कक
पक पक
कक कक
पक पक
कक कक
पक पक

फुस फुस फुस्स

हवा निकल गई गुब्बारे की
बोला -- फुस फुस फुस

थोड़ी निकली आधी निकली
पूरी निकली फुस्स

फुस्स निकल गई गुब्बारे की
बच्चे बोले -- हुस्स!

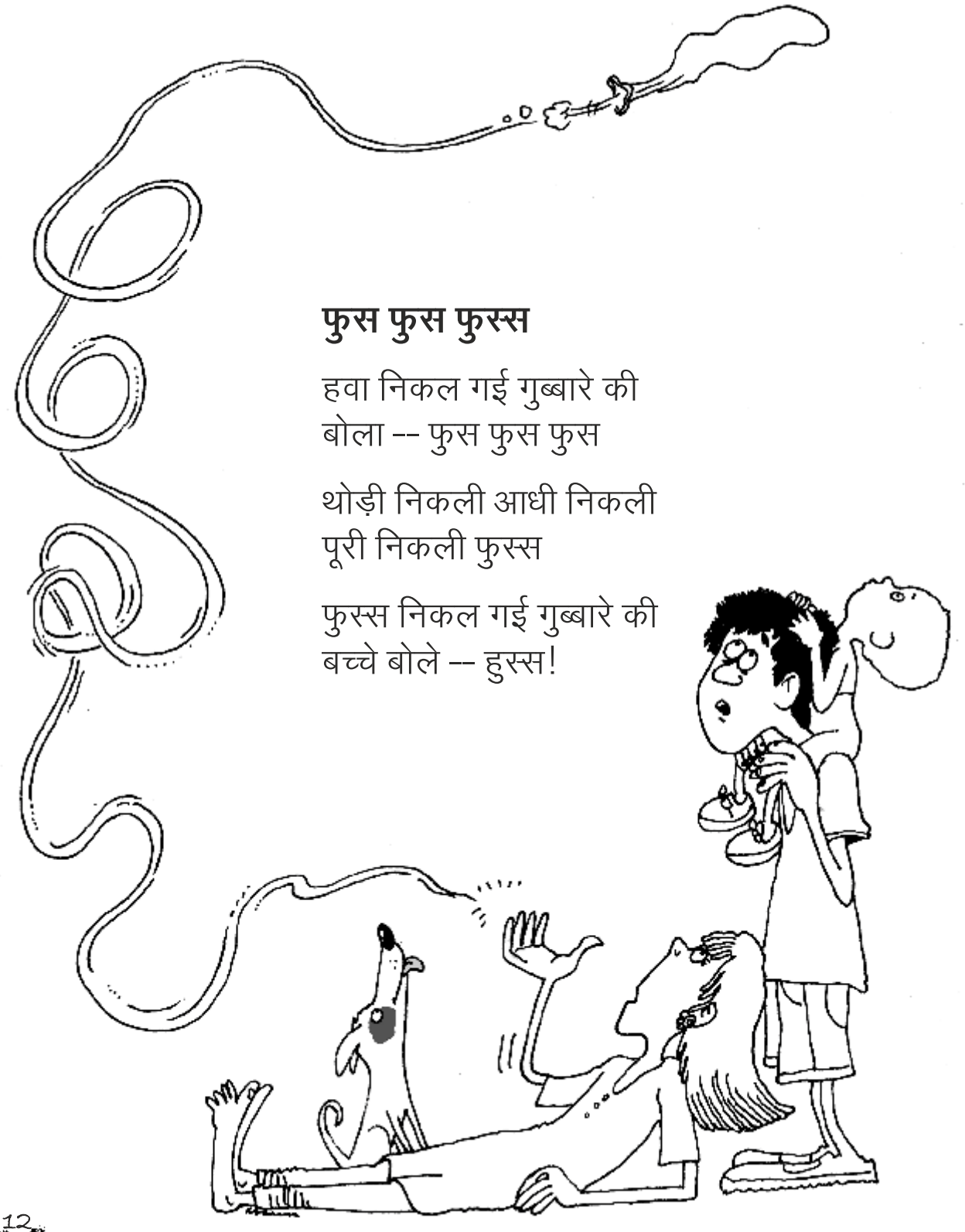

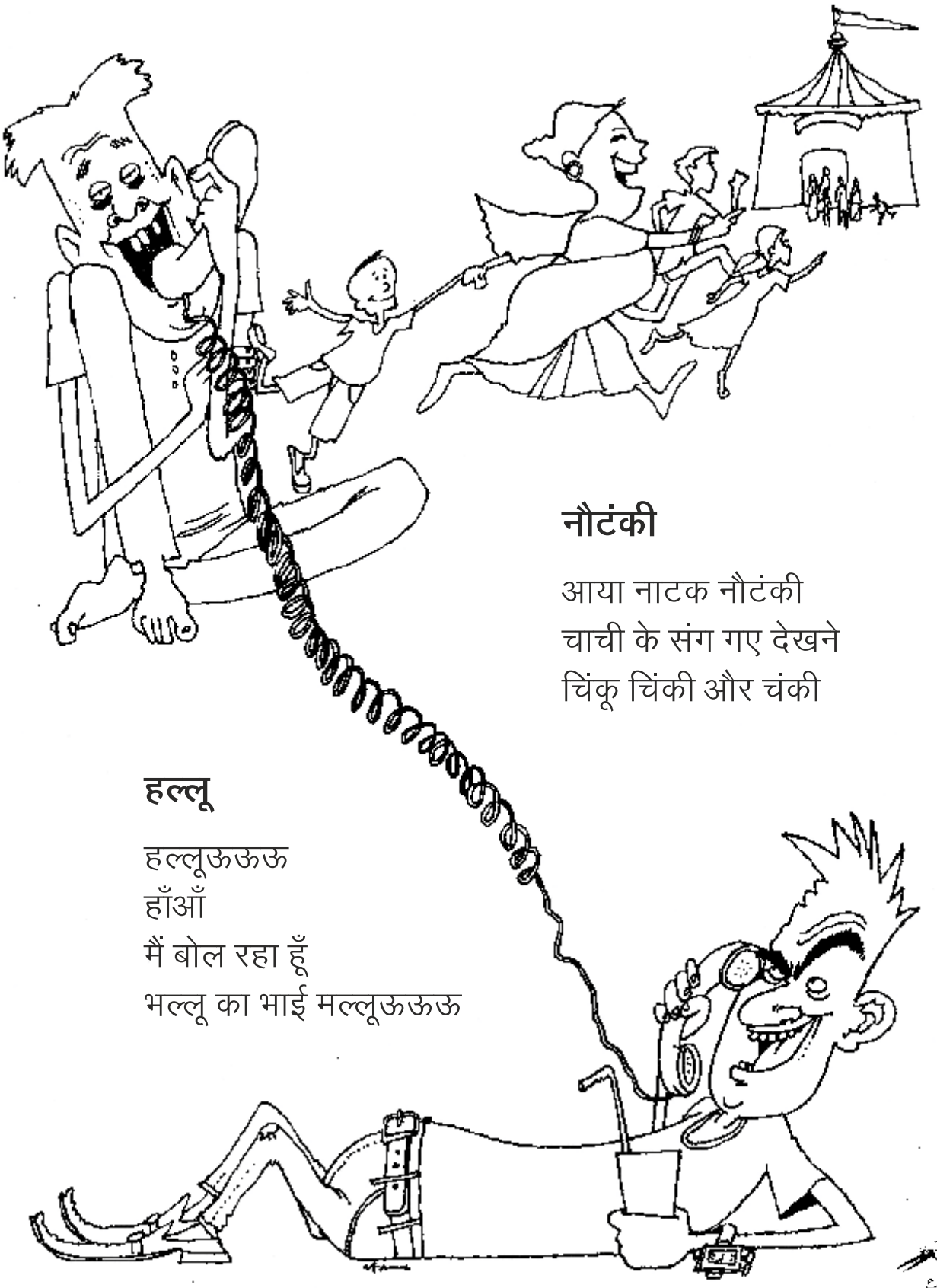

नौटंकी

आया नाटक नौटंकी
चाची के संग गए देखने
चिंकू चिंकी और चंकी

हल्लू

हल्लूऊऊऊ
हाँआँ
मैं बोल रहा हूँ
भल्लू का भाई मल्लूऊऊऊ

गोलमटोल

नाम
गोल
गाम
टोल
इलाका
गोलमटोल

लट्टू

एक भाई मट्टू
एक भाई सट्टू
उनके घर में
दो दो लट्टू
एक चले जाए
एक जले जाए

पट पट खट खट

ताली बजी पट
गुब्बारा फूटा फट
दरवाज़ा खुला शट

ताली बजी पट-पट
गुब्बारे फूटे फट-फट
दरवाज़े खुले शट शट

ताली बजी पट-पट-पट
गुब्बारे फूटे फट-फट-फट
दरवाज़े खुले शट शट शट

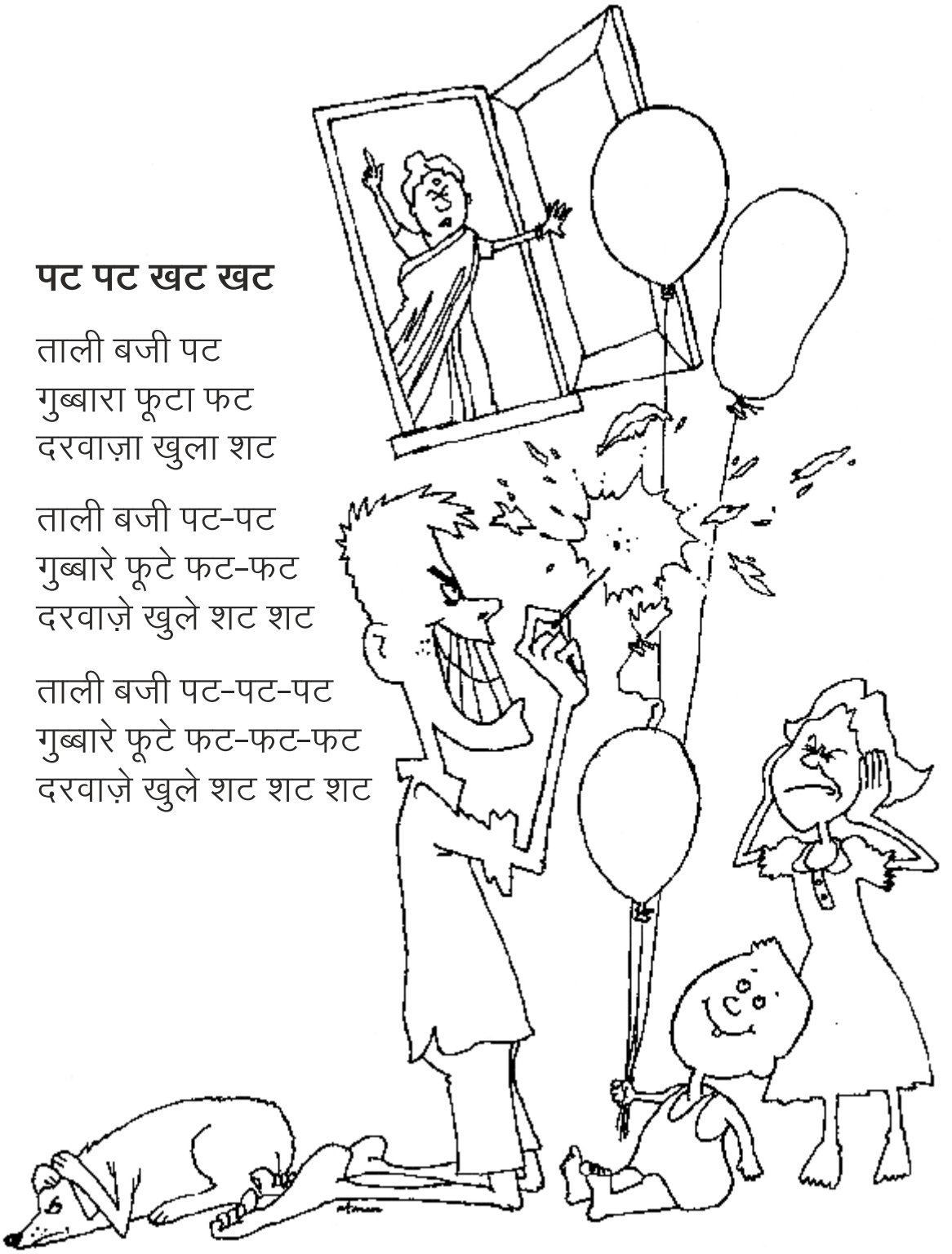

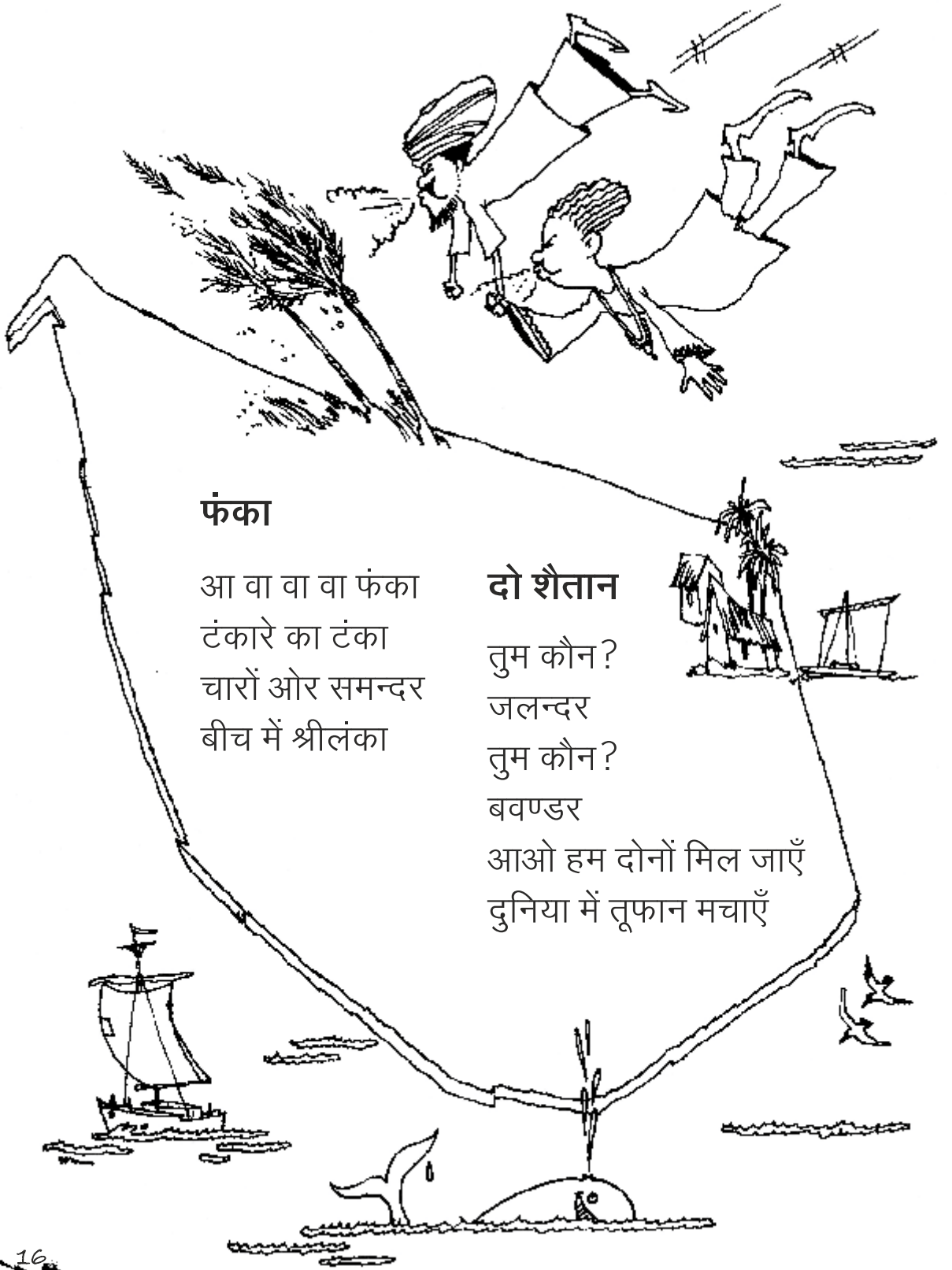

फंका

आ वा वा वा फंका
टंकारे का टंका
चारों ओर समन्दर
बीच में श्रीलंका

दो शैतान

तुम कौन?
जलन्दर
तुम कौन?
बवण्डर
आओ हम दोनों मिल जाएँ
दुनिया में तूफान मचाएँ

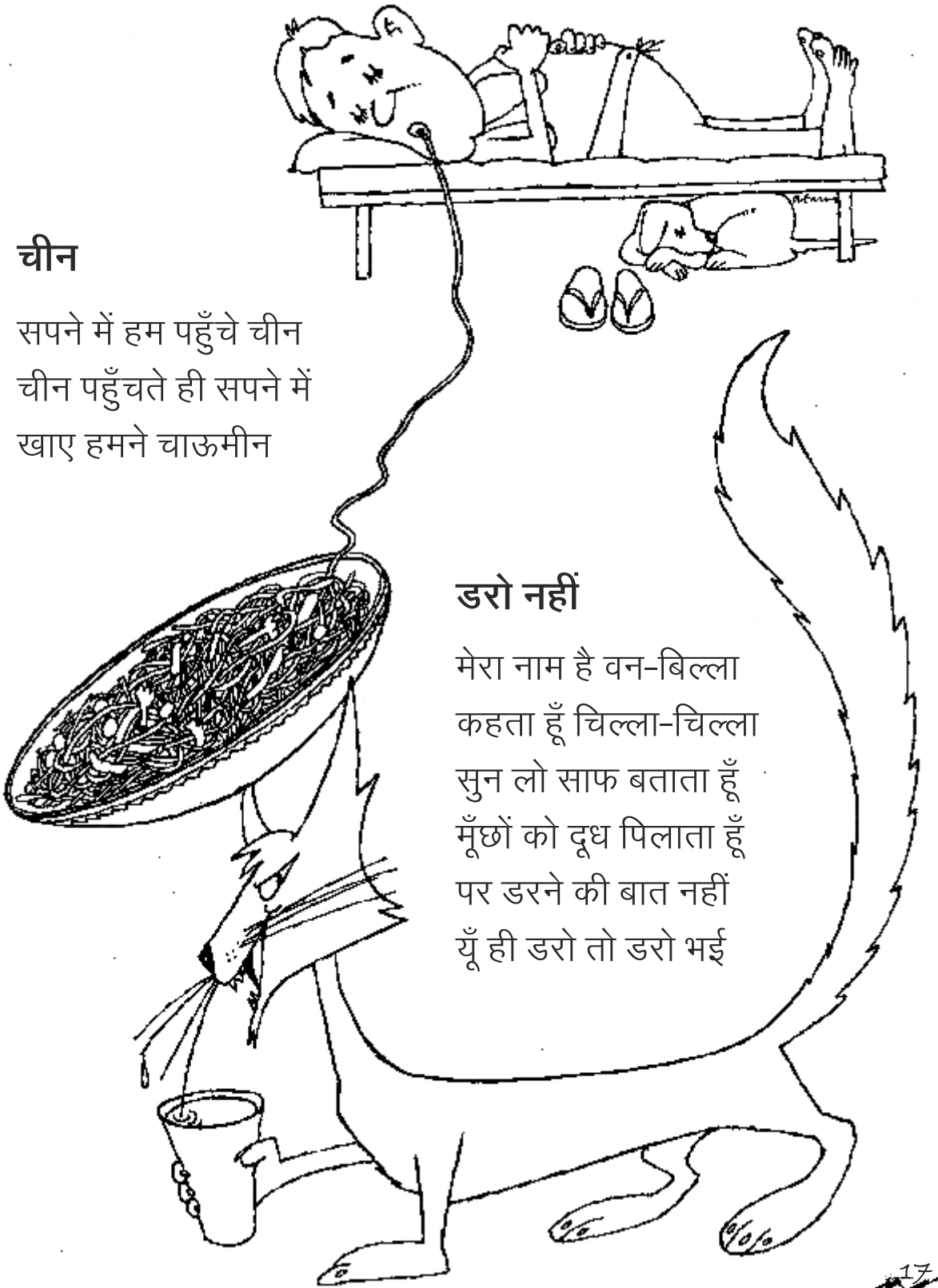

चीन

सपने में हम पहुँचे चीन
चीन पहुँचते ही सपने में
खाए हमने चाऊमीन

डरो नहीं

मेरा नाम है वन-बिल्ला
कहता हूँ चिल्ला-चिल्ला
सुन लो साफ बताता हूँ
मूँछों को दूध पिलाता हूँ
पर डरने की बात नहीं
यूँ ही डरो तो डरो भई

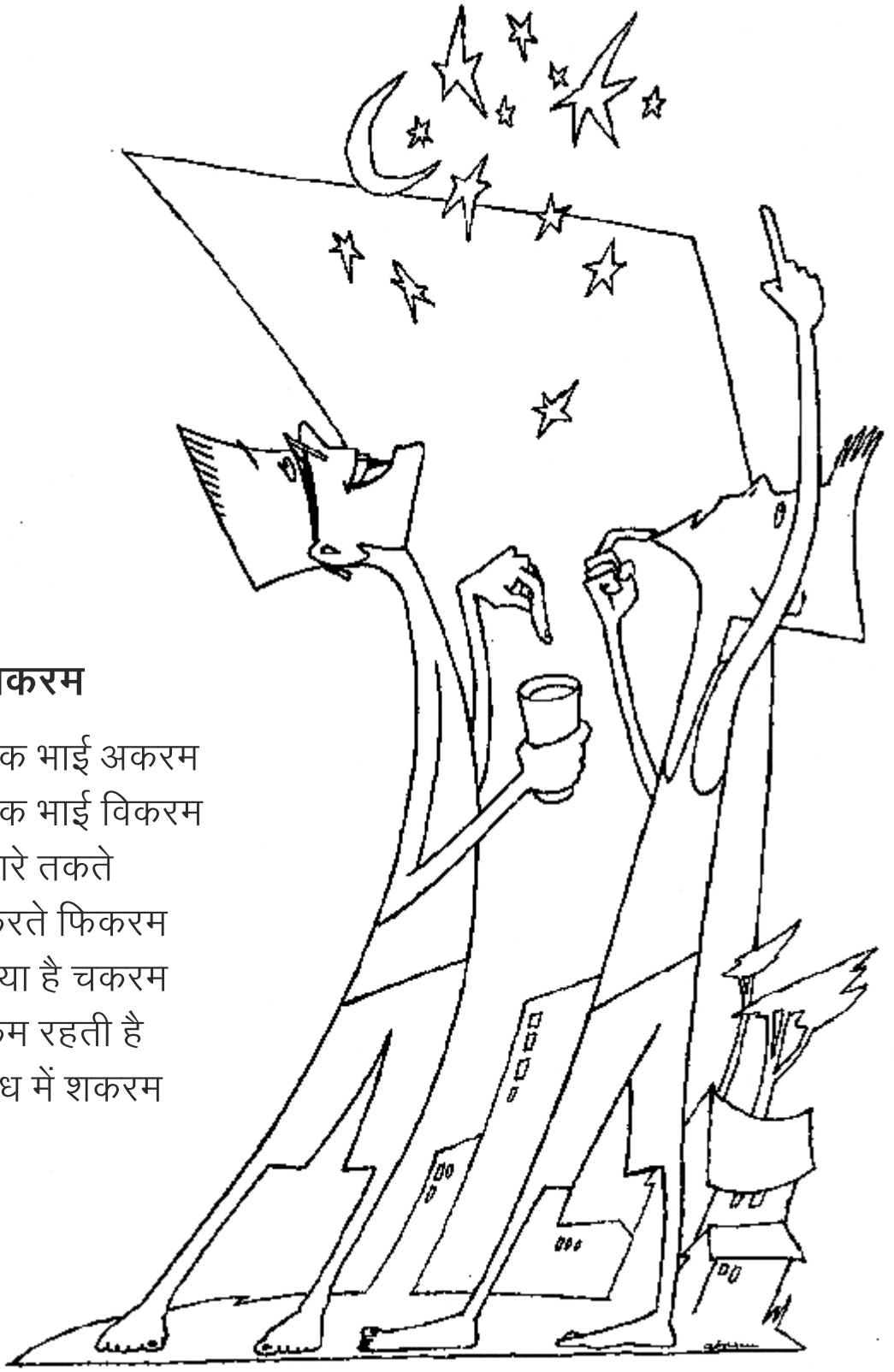

चकरम

एक भाई अकरम
एक भाई विकरम
तारे तकते
करते फिकरम
क्या है चकरम
कम रहती है
दूध में शकरम

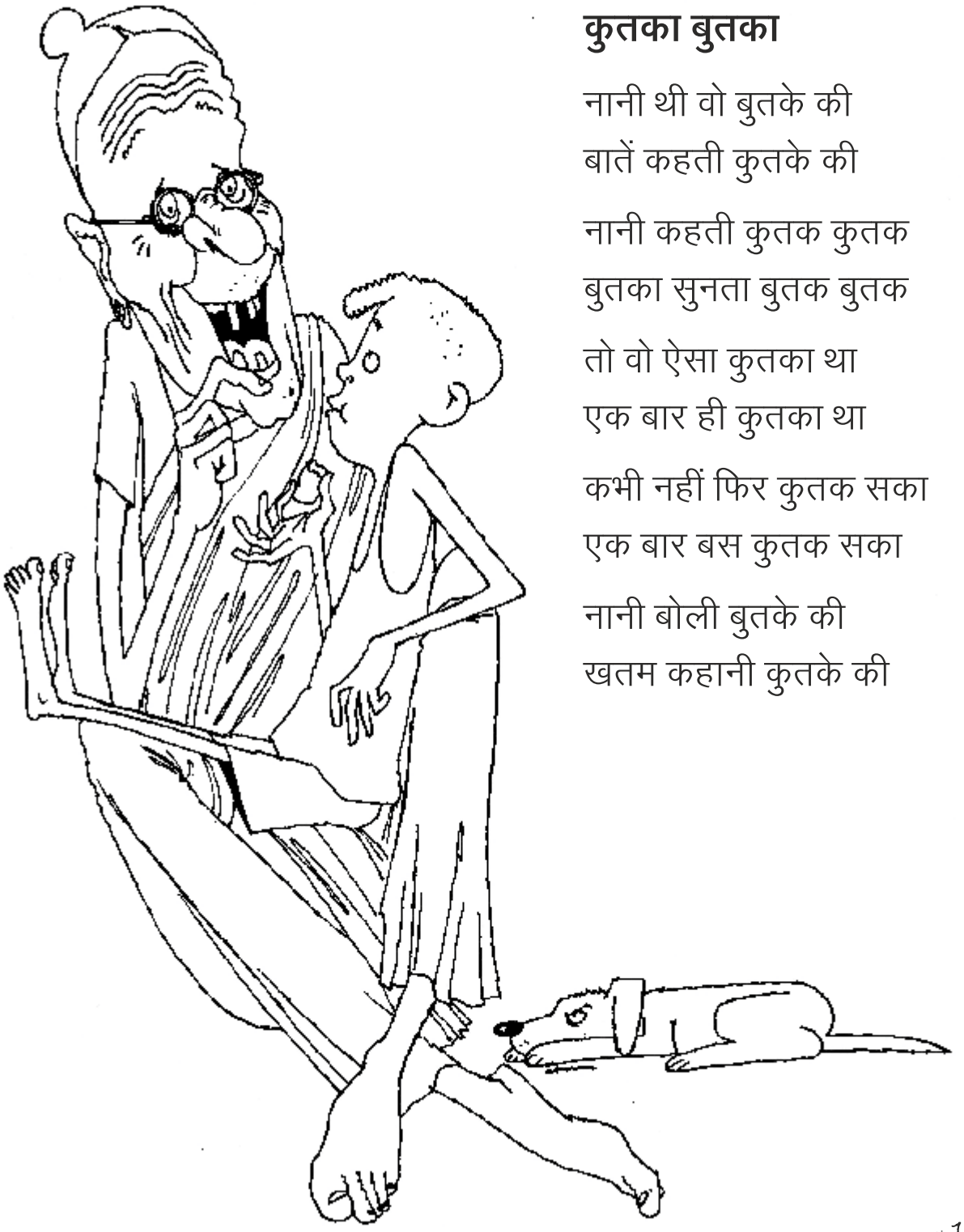

कुतका बुतका

नानी थी वो बुतके की
बातें कहती कुतके की

नानी कहती कुतक कुतक
बुतका सुनता बुतक बुतक

तो वो ऐसा कुतका था
एक बार ही कुतका था

कभी नहीं फिर कुतक सका
एक बार बस कुतक सका

नानी बोली बुतके की
खतम कहानी कुतके की

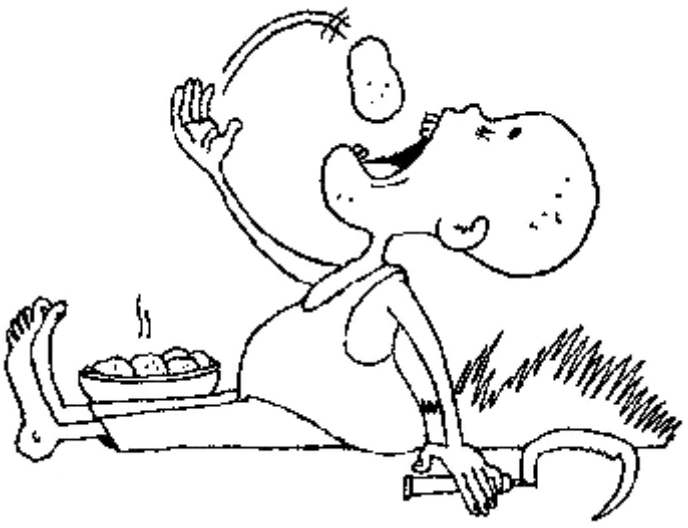

साइकिल पर था कव्वा!

CYCLE PAR THA KAVVA!

प्रभात

कलाः अतनु रॉय

© प्रभात एवं एकलव्य / सितम्बर 2010 / 5000 प्रतियाँ
इस किताब की कविताओं का गैर-व्यावसायिक शैक्षणिक उद्देश्य से इसी या इसके समान कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में किताब का उल्लेख अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य तथा रचनाकारों से सम्पर्क करें।

कागज़ः 100 gsm मेपलिथो और 200 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
ISBN: 978-81-89976-75-0
मूल्यः ₹ 20.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म. प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017 फैक्सः (0755) 255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोनः (0755) 2587 551

प्रभात

गँवई भाषा में रचे गीतों के लिए पहचाने जाने वाले प्रभात की पैदाइश राजस्थान के गाँव रायसना की है। लोकगीतों के दंगल सुनने और लोकगीतों के संकलन में उनकी विशेष रुचि है। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ और कहानियाँ प्रकाशित। प्रमुख कृतियाँ - *बंजारा नमक लाया* और *पानियों की गाड़ियों में* (गीत संकलन), *कालीबाई* (नाटक)। एकलव्य की बाल पत्रिका *चकमक* में अमिया नामक कहानी श्रृंखला प्रकाशित। राजस्थान के मीणा समुदाय की चर्चित गायन 'शैली फड़' के फनकार धवले मीणा पर स्वतंत्र अध्ययन का कार्य।

अतनु रॉय

पिछले चार दशकों से भी अधिक समय से चित्रांकन में लीन। बच्चों की चित्रकथाओं पर काम करना इनके कैरियर का सबसे ज़्यादा सन्तोषजनक हिस्सा रहा है। विभिन्न शैलियों और माध्यमों का उपयोग करते हुए इन्होंने सौ से भी ज़्यादा बच्चों की किताबों का चित्रांकन किया है। पुस्तकों का रूपांकन, चित्रांकन और कार्टून बनाने के साथ ही उद्योग जगत के लिए ग्राफिक डिज़ाइनिंग भी करते हैं। अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी, रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्य प्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

इस किताब की सामग्री एवं सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्क: books@eklavya.in

ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016

कौआ कभी साइकिल चलाता है? नहीं न?

कविताएँ हमें आज़ादी देती हैं — अपने मन के हिसाब से चीज़ों को देखने की, कहने की। इस संग्रह की कविताओं में शब्दों को तोड़-मरोड़कर, उन्हें कसकर और खुला छोड़कर ऐसा बनाया गया है कि वे तुम्हारी ज़ुबाँ पे आकर खूब ठुमकेंगे-खनकेंगे। और तुम्हारे मन को नया देखने-सुनने-करने की आज़ादी देंगे।

ISBN: 978-81-89976-75-0

9 788189 976750

एकलव्य

मूल्यः ₹ 20.00

A0201H

SRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित